ज्ञान शांति मैत्री

**महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा**

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

**जनसंपर्क कार्यालय**

**PUBLIC RELATIONS OFFICE**

आज़ादी का अमृत महोत्सव

## हिंदी की संवैधानिक स्थिति एवं वर्तमान तकनीकी चुनौतियां पर विशेष व्याख्यान

## निष्ठा और संकल्प से आगे बढ़ेगी हिंदी : प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित

**वर्धा, 15 सितंबर 2026:** महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी की संवैधानिक स्थिति एवं वर्तमान तकनीकी चुनौतियां विषय पर सोमवार को आयोजित विशिष्ट व्याख्यान में लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अवकाश प्राप्त अध्यक्ष प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने कहा कि आंतरिक निष्ठा और संकल्प से ही हिंदी भाषा की प्रगति को और गति दी जा सकती है। विश्वविद्यालय के हिंदी साहित्य विभाग की ओर से महादेवी वर्मा सभागार में कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा की अध्यक्षता में विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

प्रो. दीक्षित ने अपने ऑनलाइन व्याख्यान में कहा कि हिंदी सृजन, व्यापार, तकनीकी और राजकाज की भाषा है। उन्होंने कहा कि 14 सितंबर 1950 में नियमावली बनने के बाद हिंदी को पंद्रह वर्षों में सर्वांग सम्पन्न बनाया जाने का लक्ष्य रखा गया था। इसके

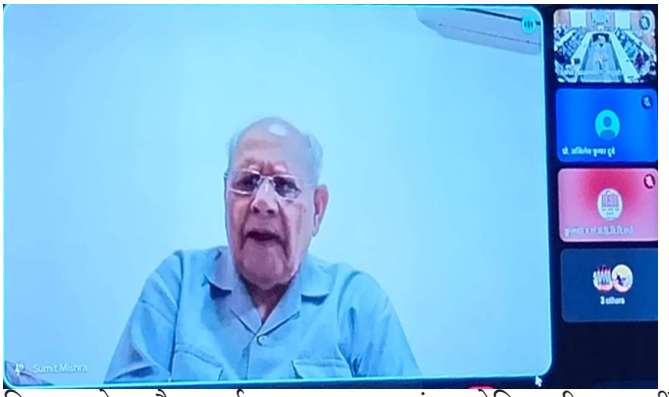

लिए आयोग और कार्यालय बनाए गए, परंतु अपेक्षित परिणाम नहीं निकल पाए। बदलते तकनीकी के दौर में अधिनियम की धाराओं में परिवर्तन आवश्यक है। उनका कहना था कि युनिकोड के कारण हिंदी को आगे बढ़ने में बड़ी मदद मिली है। हमें सत्यनिष्ठा के साथ हिंदी को आगे ले जाना चाहिए। उन्होंने भाषा का स्वतंत्र मंत्रालय बनाए जाने की जरूरत जताते हुए कहा कि भाषा का नष्ट होना एक संस्कृति के नष्ट होने का कारण बनता है इसलिए भाषाओं को बचाने के लिए स्वतंत्र मंत्रालय बनाना आवश्यक है। उन्होंने हिंदी के समक्ष आ रही तकनीकी चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला।

अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि अंग्रेजी का मोह छोड़ कर हमें अपने भीतर भरोसा, आत्म विश्वास और स्वाभिमान पैदा कर हिंदी को वर्तमान तकनीकी के दौर में अधिक सक्षम बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि भाषा में सरलता ही उसकी गति को बढ़ाती है। हमें दैनिक जीवन में प्रचलन के शब्दों को उपयोग में लाना चाहिए। उनका कहना था कि आंतरिक निष्ठा और दृढ़ संकल्प से ही भाषा की प्रगति संभव है। उन्होंने आह्वान किया कि सरकारी कार्यालयों मौलिक कार्य से हिंदी को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

कार्यक्रम का स्वागत भाषण हिंदी साहित्य विभाग की अध्यक्ष प्रो. प्रीति सागर ने दिया। उन्होंने कहा कि हमारा विश्वविद्यालय हिंदी के वैश्विक प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध है। इस दिशा में हमें जिम्मेदारी के साथ हिंदी को वैश्विक पटल पर ले जाने में काम करना चाहिए।

कार्यक्रम का संचालन हिंदी साहित्य विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. सुनील कुमार ने किया तथा एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्ज्वलन एवं कुलगीत गायन से किया गया। इस अवसर पर प्रो.

**पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत**

**ई-मेल/E-mail:** pro.mgahv@hindivishwa.ac.in **वेबसाइट/Website:** www.hindivishwa.org

**दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305**

जनार्दन कुमार तिवारी, डॉ. एच. ए. हुनगुंद, डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. रूपेश कुमार सिंह, डॉ. शैलेष मरजी कदम, डॉ. कोमल कुमार परदेसी, डॉ. रवि कुमार, डॉ. अमित विश्वास, बी.एस. मिरगे सहित बड़ी संख्या में शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति रही।

## हिंदीची संवैधानिक स्थिती आणि सध्याची तांत्रिक आव्हाने विषयावरील विशेष व्याख्यान
## निष्ठा आणि दृढ संकल्पामुळेच हिंदीची प्रगती होईल : प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित

**वर्धा, १५ सप्टेंबर २०२६ :** महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विद्यापीठात हिंदी दिनानिमित्त "हिंदीची संवैधानिक स्थिती आणि सध्याची तांत्रिक आव्हाने" या विषयावर सोमवारी आयोजित विशेष व्याख्यानात लखनऊ विद्यापीठाच्या हिंदी विभागाचे निवृत्त विभागप्रमुख प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित म्हणाले की, अंतःकरणातील निष्ठा आणि दृढ संकल्प यांच्या बळावरच हिंदी भाषेच्या प्रगतीला अधिक गती देता येईल. विद्यापीठाच्या हिंदी साहित्य विभागातर्फे महादेवी वर्मा सभागृहात कुलगुरू प्रो. कुमुद शर्मा यांच्या अध्यक्षतेखाली या विशेष व्याख्यानाचे आयोजन करण्यात आले.

ऑनलाइन माध्यमातून व्याख्यान देताना प्रो. दीक्षित म्हणाले की, हिंदी ही सृजन, व्यापार, तंत्रज्ञान आणि प्रशासनाची भाषा आहे. १४ सप्टेंबर १९५० रोजी नियमावली तयार झाल्यानंतर हिंदीला पंधरा वर्षांत सर्वांगसुंदर आणि सक्षम भाषा बनविण्याचे उद्दिष्ट ठेवण्यात आले होते. यासाठी आयोग आणि विविध कार्यालयांची स्थापना करण्यात आली; मात्र अपेक्षित परिणाम साध्य झाले नाहीत. बदलत्या तांत्रिक युगात संबंधित अधिनियमांच्या तरतुदींमध्ये बदल करणे आवश्यक आहे. युनिकोडमुळे हिंदीच्या विकासाला मोठी मदत झाली असल्याचे त्यांनी नमूद केले. सत्यनिष्ठेने हिंदीचा प्रसार आणि विकास करण्याची गरज त्यांनी व्यक्त केली. भाषांसाठी स्वतंत्र मंत्रालय स्थापन करण्याची आवश्यकता अधोरेखित करताना ते म्हणाले की, एखादी भाषा नष्ट होणे म्हणजे एका संस्कृतीचा नाश होणे होय. त्यामुळे भाषांचे संरक्षण करण्यासाठी स्वतंत्र मंत्रालय असणे आवश्यक आहे. त्यांनी हिंदीसमोरील विविध तांत्रिक आव्हानांवरही प्रकाश टाकला.

अध्यक्षीय भाषणात कुलगुरू प्रो. कुमुद शर्मा म्हणाल्या की, इंग्रजीबद्दलचा अतिरेकी मोह सोडून आपल्या मनात विश्वास, आत्मविश्वास आणि स्वाभिमान निर्माण करून हिंदीला आधुनिक तांत्रिक युगात अधिक सक्षम बनविण्याची गरज आहे. भाषा जितकी सोपी असेल तितकी तिची प्रगती अधिक वेगाने होते, असे त्या म्हणाल्या. दैनंदिन जीवनात प्रचलित असलेल्या शब्दांचा वापर वाढविण्याचे त्यांनी आवाहन केले. अंतर्गत निष्ठा आणि दृढ संकल्प यांच्या बळावरच भाषेची खरी प्रगती शक्य असल्याचे त्यांनी स्पष्ट केले. सरकारी कार्यालयांमध्ये मौलिक कामकाज हिंदीतून करून भाषेला प्रोत्साहन द्यावे, असेही त्यांनी सांगितले.

कार्यक्रमाचे स्वागतपर भाषण हिंदी साहित्य विभागाच्या अध्यक्षा प्रो. प्रीती सागर यांनी केले. त्या म्हणाल्या की, आमचे विद्यापीठ हिंदीच्या जागतिक प्रचार-प्रसारासाठी कटिबद्ध आहे. हिंदीला जागतिक स्तरावर अधिक व्यापक स्थान मिळवून देण्यासाठी जबाबदारीने कार्य करण्याची गरज आहे.

कार्यक्रमाचे संचालन हिंदी साहित्य विभागाचे सहायक प्रोफेसर डॉ. सुनील कुमार यांनी केले, तर असोशिएट प्रोफेसर डॉ. अशोकनाथ त्रिपाठी यांनी आभार मानले. कार्यक्रमाची सुरुवात दीपप्रज्वलन आणि कुलगीत गायनाने झाली.

यावेळी प्रो. जनार्दन कुमार तिवारी, डॉ. एच. ए. हुनगुंद, डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. रूपेश कुमार सिंह, डॉ. शैलेष मरजी कदम, डॉ. कोमल कुमार परदेसी, डॉ. रवि कुमार, डॉ. अमित विश्वास, बी. एस. मिरगे यांच्यासह मोठ्या संख्येने शोधार्थी आणि विद्यार्थी उपस्थित होते.

**Special Lecture on the Constitutional Status of Hindi and Contemporary Technological Challenges**

**Hindi Will Progress Through Commitment and Determination: Prof. Surya Prasad Dixit**

**Wardha, September 15, 2026:** On the occasion of Hindi Day, Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya organized a special lecture on "The Constitutional Status of Hindi and Contemporary Technological Challenges" on Monday. Delivering the keynote address, Prof. Surya Prasad Dixit, former Head of the Department of Hindi, University of Lucknow, stated that the progress of the Hindi language can be accelerated only through sincere commitment and determination.

The special lecture was organized by the Department of Hindi Literature at the Mahadevi Verma Auditorium under the chairmanship of Vice-Chancellor Prof. Kumud Sharma.

In his online lecture, Prof. Dixit said that Hindi is a language of creativity, commerce, technology, and governance. He noted that after the adoption of the constitutional provisions and rules in 1950, a goal was set to make Hindi a fully developed language within fifteen years. Commissions and offices were established for this purpose, but the expected results could not be achieved. He emphasized that amendments to the relevant provisions and laws are necessary in the era of rapidly changing technology. He observed that Unicode has played a significant role in advancing Hindi and stressed the need to promote the language with honesty and dedication. Highlighting the need for a separate ministry for languages, he said that the extinction of a language leads to the loss of an entire culture. Therefore, a dedicated ministry is essential for the preservation and promotion of languages. He also discussed the technological challenges currently faced by Hindi.

In her presidential address, Vice-Chancellor Prof. Kumud Sharma said that it is necessary to move beyond the excessive fascination with English and develop confidence, self-belief, and self-respect in order to strengthen Hindi in the contemporary technological era. She remarked that simplicity enhances the growth and acceptance of a language and advocated the use of commonly used words in everyday communication. She emphasized that the progress of any language is possible only through inner commitment and strong resolve. She also called for promoting Hindi through original work in government offices.

Welcoming the guests, Prof. Preeti Sagar, Head of the Department of Hindi Literature, stated that the University remains committed to the global promotion and dissemination of Hindi. She emphasized the need to work responsibly toward establishing Hindi on the global stage.

The programme was conducted by Dr. Sunil Kumar, Assistant Professor in the Department of Hindi Literature, while the vote of thanks was delivered by Dr. Ashok Nath Tripathi, Associate Professor. The event commenced with the ceremonial lighting of the lamp and the singing of the University anthem.

Among those present were Prof. Janardan Kumar Tiwari, Dr. H. A. Hungund, Dr. Ramanuj Asthana, Dr. Rupesh Kumar Singh, Dr. Shailesh Marji Kadam, Dr. Komal Kumar Pardesi, Dr. Ravi Kumar, Dr. Amit Vishwas, B. S. Mirge, along with a large number of research scholars and students.